राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 677

# हम पांच

## अश्वराज

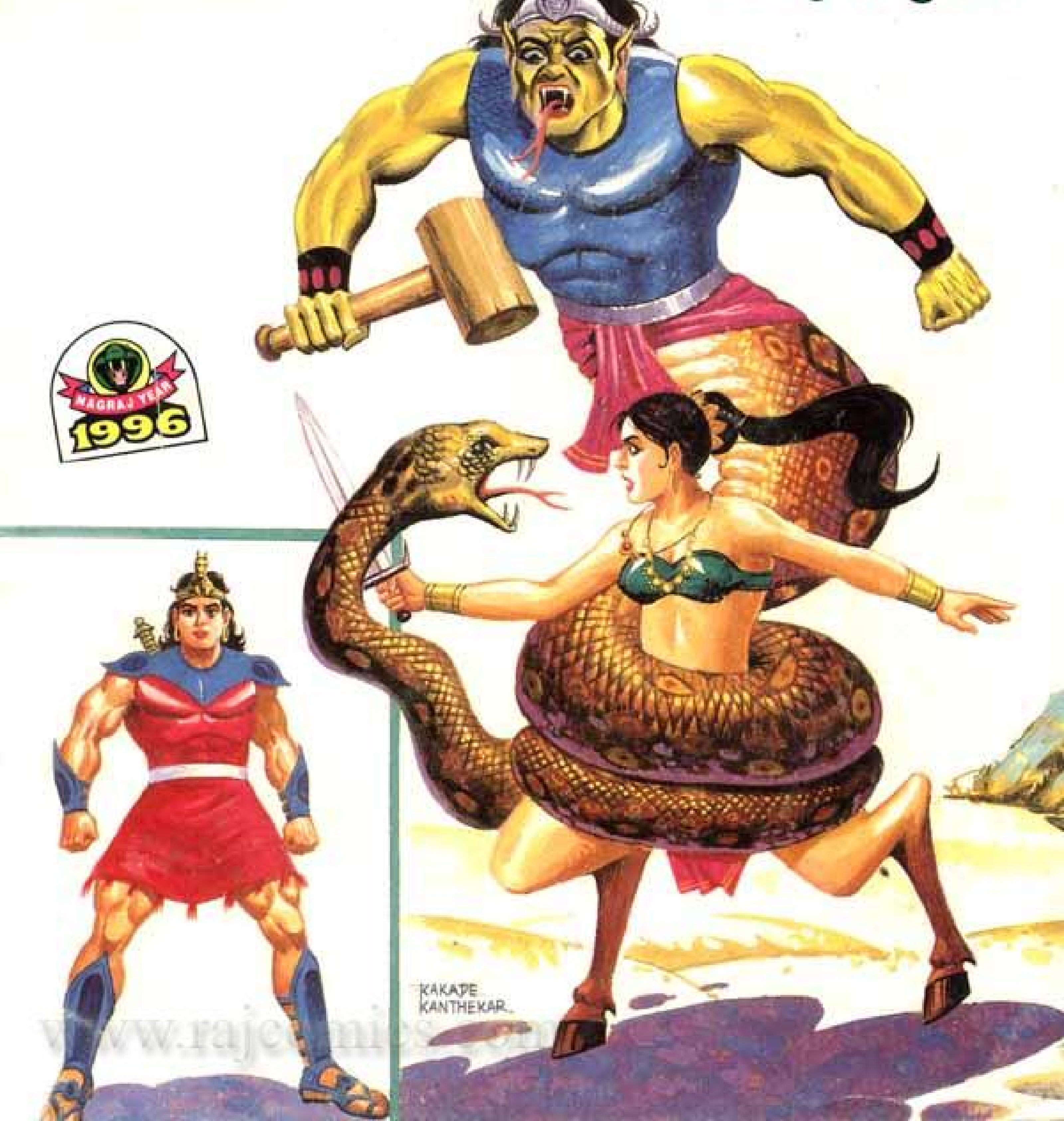


www.rajcomics.com

शैतान अश्ववाज ने तुम्हें मौत के मुकाम तक पहुंचा जरूर दिया है अश्वराज... लेकिन अपनी जिन्दगी के आखिरी क्षण तक भी तुम्हारी जिन्दगी बचाने की हर संभव कोशिश करेंगे...
हम पांच
लेखक: तरुणकुमार वाही
संपादन: मनीष गुप्ता
चित्रांकन: मिलिंद मिसाळ विट्ठल कांबळे
सुलेख: अंकुश लोखंडे

सम्पूर्ण अश्वलोक में बर्दनी-सी छा गई थी अश्वराज, कदमछुम्बी और पंचाश्व के तिलिस्मी घेरे में समा जाने का समाचार सुनकर सैकड़ों की तादाद में वहां इकट्ठे हो गए थे लोग-
जब तक लौट नहीं आता अश्वराज हम उनकी यहां प्रतीक्षा करेंगे।
और आज सबकी प्रतीक्षा की अवधि समाप्त होने वाली थी-
तिलिस्मी घेरा पुनः प्रकट हो रहा है!
तिलिस्मी घेरे में से सर्वप्रथम तीर की सी तेजी के साथ उछला शैतान अश्वबाज का सिर-
स्वुऽऽ
जिसे देखकर रोमांच से सिहर उठे सभी-

तब हर्षोल्लास और उत्तेजना से भीग गईं अश्वनागरिकों की आंखें—
अश्वराज लौट आया!
राजकुमारी कुसुमकुन्नी जिन्दाबाद
अश्वराज...
पंचाश्व कहां है?
जिन्दाबाद
फिर एक के बाद एक पंचाश्व ने भी तिलिस्मी छोरे से बाहर कदम रखा—
मातृभूमि का स्पर्श! कितना सुखद अहसास है ये।
इधर मातृभूमि की मिट्टी को उसने मुट्ठी में भर लिया था—
जन्मभूमि के स्पर्श के बाद अब दुख नहीं रहा मुझे मृत्यु का।
कई चीखें निकल गईं अश्वराज के भूमि पर गिर जाने से—
अश्वराज! नहीं अश्वराज! नहीं मत जाओ।
अश्वराज! क्या हुआ अश्वराज को?
अश्वराज के मुंह से नीले झाग उबल रहे हैं।

तब! वह रथ लगभग उड़-सा चला अश्वराज को लेकर महल की ओर –
राजवैद्य! तुम्हें बचा लेंगे अश्वराज!
मगर तब तक होश खो चुका था अश्वराज।
इधर महल में अश्वराज के लौट आने का समाचार सुनकर जो चमक उभरी थी घोड़ीलेखा की आंखों में वो अगले ही पल बुझ गई–
नहीं! कुछ नहीं हो सकता भैया अश्वराज को।
महल के उस कक्ष में प्रत्येक चेहरे पर मौजूद था सन्नाटा–
अश्वराज के रक्त में घातक विष घुल चुका है।
जिसकी काट अश्वलोक में तो क्या पूरे संसार में एक ही है!...
...और वह है अमृतांजन!
शीघ्र बताएं राजवैद्य कि अमृतांजन कहां मिल सकता है?

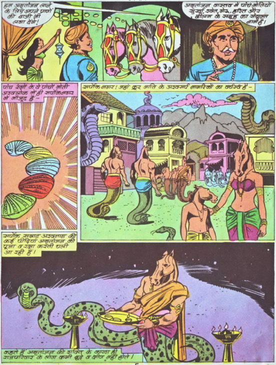
हम अमृतांजन लाने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी भी लगा देंगे!
अमृतांजन वास्तव में पांच मोतियों सुर्ख, श्वेत, गेरू, हरित और बैंगनी के समूह का संयुक्त नाम है।
पांच रंगों के ये पांचों मोती अश्वलोक के ही सर्पोकनगर में मौजूद हैं –
सर्पोकनगर! जहां क्रूर जाति के अश्वसर्प नागरिकों का वर्चस्व है –
सर्पोक सम्राट अश्वनाग की कई पीढ़ियां अमृतांजन की पूजा व रक्षा करती चली आ रही हैं।
कहते हैं अमृतांजन की शक्ति के कारण ही राजपरिवार के लोग कभी बूढ़े व क्षीण नहीं होते।

यह सब सुनते-सुनते कुदुमकुम्खी की आंखों में अद्भुत चमक आ गई-
अगर अमृतांजन सर्पोक-नगर में ही मौजूद है तो यह हमारी खुशकिस्मती है।
अश्वलोक का कोई भी सम्राट, चक्रवर्ती सम्राट अश्वराज की प्राण रक्षा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा सकता है।
महामंत्री चुप न रह सके-
लेकिन सर्पोकनगर का एक-एक नागरिक हमारा दुश्मन बन चुका है पुत्री कुदुम!
!!
सर्पोकसम्राट हमें अमृतांजन कदापि न देंगे।
मगर क्यों? क्यों नहीं देंगे वो हमें अमृतांजन?
यह आपको मैं बताती हूं, भाभीश्री!
घ...घोड़ीलेखा!
भाभीश्री! अह! क्या हो गया ये सब?
भाग्य पर अटल विश्वास है मुझे। और मेरा विश्वास कहता है कि तुम्हारे भैया बिल्कुल अच्छे हो जाएंगे।
और अब तुम मुझे बताओ कि सर्पोक-नगर का बच्चा-बच्चा हमारा दुश्मन किस प्रकार से हो गया?
आपके तिलिस्मी घेरे में चले जाने का समाचार सुनकर हम स्वयं को घटनास्थल की ओर चल पड़ने से न रोक सके थे...

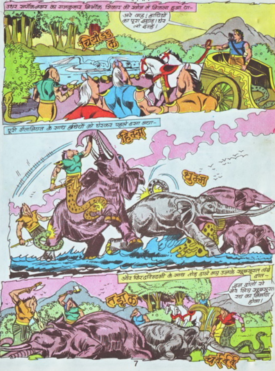
उधर सर्पेकनगर का राजकुमार निर्भीक शिकार की खोज में निकला हुआ था–
अरे वाह! हाथियों का पूरा झुण्ड! घेर लो इन्हें!
चियोंऽऽक
पूरी हैवानियत के साथ हथियों को घेरकर पहले हराया गया–
हिक्स
धुम्म
और फिर दरिन्दगी के साथ तोड़ डाले गए उनके खूबसूरत लंबे दांत–
इन दांतों से मेरे लिए खूबसूरत रथ का निर्माण होगा।
तड़ाक
चर्र्र्र

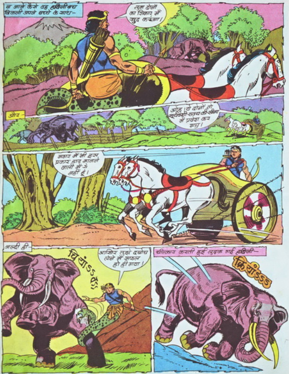

न जाने कैसे वह हथिनी बच निकली अपने बच्चे के साथ–
तुम दोनों का शिकार मैं खुद करूंगा!
और–
ओह! ये दोनों तो सूर्यवंशी राज्य की सीमा में प्रवेश कर गए!
मगर मैं भी इस प्रकार हार मानने वालों में से नहीं हूं।
जल्दी ही–
चिंयांऽऽऽऽ
आखिर तुझे दबोच लेने में सफल हो ही गया!
चीत्कार करती हुई लुढ़क गई हथिनी–
चिंयांऽऽऽ

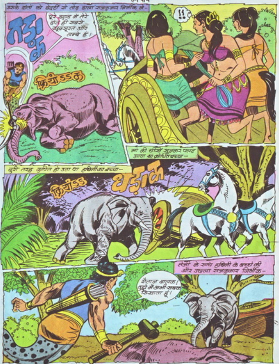
उसके दांतों को बेदर्दी से तोड़ डाला राजकुमार निर्भीक ने-
गड़ाक
पूरे झुण्ड में तेरे दांत ही सबसे खूबसूरत और लम्बे हैं।
क्रियांऽऽक
!!
बुरी तरह कुपित हो उठा था हथिनी का बच्चा-
मां की चीखें सुनकर पलट आया था क्रोधित बच्चा-
क्रियांऽऽ
धड़ाक
तेजी के साथ हथिनी के बच्चे की और उछला राजकुमार निर्भीक-
शैतान बालक! तुझे मैं अभी सबक सिखाता हूं।

लेकिन इससे पूर्व कि वह हथौड़े की चोट से अपनी माँ की लाश के पास बैठे विलाप करते उसके मासूम व निरीह बच्चे का मस्तक तोड़ डालता, चट्टान-सी मजबूती लिए बीच में आ गई थी-
!!
ठहरो! रुक जाओ! नीच पापी शैतान!
दिखने में तो सभ्य लगते हो तुम, मगर कर्मों में शैतानियत व दरिन्दगी भरी है तुम्हारे। कौन हो तुम?
दिखने में तो तुम भी सुन्दर राजकुमारी प्रतीत होती हो, मगर स्वभाव में तुम्हारे भी नागिन का-सा जहर भरा है। तुम कौन हो?
सूर्यवंशी की राजकुमारी और अश्वराज की बहन।
मुझे निर्भीक कहते हैं। सर्पोल-नगर का राजकुमार हूं मैं।
अब तुम जल्दी से मेरे मार्ग से हट जाओ ताकि मैं उस हथिनी का दूसरा दांत तोड़ लूं
और उस शैतान हथिनी के बच्चे को भी सबक सिखा दूं।

सबक तो तुम्हें मैं सिखाऊंगी अगर तुम फौरन ही मेरे रास्ते की सीमा से दूर न चले जाए तो!
दांत लिए बिना नहीं जाऊंगा राजकुमारी घोड़ीलेखा!
तो फिर क्यों न फैसला मुझसे युद्ध के साथ हो कि तुम दांत लेकर जाओगे या खाली हाथ।
अबला स्त्री से युद्ध यूं तो मैं कभी न करता मगर तुम्हारी चुनौती के इस गुरूर को तोड़ने के लिए...
...मुझे यह युद्ध भी स्वीकार है।
टनक
शेरनी की तरह टूट पड़ी थी मैं राजकुमार भिभिक पर-
आहे!
ही
ही
चर्र र्र
अश्वराज व भाभीश्री के तिलिस्मी घेरे में समा जाने के समाचार का दुख बेचैन किए हुए है मुझे मगर यह दरिंदगी भी तो मैं नहीं देख सकती।

इस बार मुझ पर प्रहार करने की उसकी मंशा को असफल किया उस हाथी के बच्चे ने—
ये पशु ही भले जो दोस्त और दुश्मनों में फर्क महसूस कर पाते हैं।
धड़ाम
हार के इस अपमान से क्रुद्ध हो उठा था राजकुमार निर्भीक—
आओ राजकुमार निर्भीक! आओ! और इन पशुओं से सीखो अस्यता का पाठ।
अस्यता: मानवता जैसा एक शब्द।
लोमड़ी की तरह घात लगाकर वार करने वाले शत्रुओं को मैं कायर समझती हूं और वैसा ही किया था राजकुमार निर्भीक ने—
मैं यहां से जरूर जाऊंगा राजकुमारी, लेकिन तुम्हें भी साथ लेकर।
तुम्हें अब मेरी दासी बनकर रहना होगा क्योंकि नरक में।
यह देख मेरी सखियां जो अब तक इस तमाशे को चुपचाप देख रही थीं राजकुमार निर्भीक पर बिजलियों की मानिन्द टूट पड़ीं—
इस शैतान को हिरासत में ले लेना चाहिए राजकुमारीजी!
अब स्त्रियों के हाथों हो रही अपनी दुर्गति के कारण अपना मानसिक संतुलन खो बैठा वो शैतान और—
अब तुम सब भुगतोगी मेरा रास्ता काटने की सजा।

दरिन्दगी अघन्य अपराध का रूप लेने लगी-
खून सवार हो गया था उस जुनूनी पर-
हिस्स
र... राजकुमारी... आह!
विक्षिप्त हो उठी मैं उसकी वहशियाना हंसी पर-
राजकुमारी छोड़ो लिया! अब तुम मेरे साथ चलोगी!
!!
लेकिन तभी-
ओह!

सैनिक मुझे ढूंढते हुए वहां आ पहुंचे थे–
सैनिको! पकड़ लो इस दरिन्दे को। सूर्यवंशी के कानून के मुताबिक मुकदमा चलाया जाएगा इस पर।
अश्वराज के जाने के बाद मुझे ही यहां की कार्यकारी सम्राज्ञी घोषित किया गया था–
अपराधी राजकुमार निर्भीक का अपराध अक्षम्य ही नहीं बल्कि शर्मनाक भी है। हम इसे फांसी का आदेश देते हैं।
सार्वजनिक रूप से फांसी दी जाना तय हुआ था राजकुमार निर्भीक को–
अपने फैसले पर तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा घोड़ीरानी। तहस-नहस कर दिया जाएगा सूर्यवंशी को।
मेरे संकेत पर उस हाथी को आगे बढ़ा दिया गया और–
आह!
फांसी पर झूल गया था वो शैतान–
राजकुमार निर्भीक के शव को सर्पोंके महल पहुंचा दिया गया।
मेरे पुत्र का शव। उफ! नहीं, नहीं।
शव लेकर गए सैनिकों को कत्ल कर दिया अश्वनाग ने–

और-
!!
राजकुमार निर्भीक की हत्या का प्रतिशोध अवश्य लिया जायेगा मगर वह काम अश्वराज की वापसी के बाद होगा। हम समय की प्रतीक्षा करेंगे।
सर्पकेतु सम्राट
ओह!
राजकुमारी चोटीलेखा ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा-
इस प्रकार आज सर्पकेतुनगर का बच्चा-बच्चा सूर्यवंशीनगर के बच्चे-बच्चे का दुश्मन हो गया है।
मगर अश्वराज के जीवन के लिए अमृतांजन की आवश्यकता तो हमें हर सूरत में है।
चाहे फिर उसे हमें बलपूर्वक ही क्यों न प्राप्त करना पड़े।
यह कार्य आप हम पंचों पर छोड़ दें भाभीश्री। ये प्राण, जो अश्वराज की ही सांस के साथ सांस भरते हैं अगर इनके चलते अश्वराज की सांसों पर संकट आए तो लानत है ऐसे जीवन पर।
अमृतांजन प्राप्त करने सम्बन्धी आवश्यक जानकारियां लेकर...

...रक्तांबर, कमलखोर; नीलकंठ, भवशक्ति और अश्वराट निकल पड़े विपरीत दिशाओं में! और आज यह काम उन्हें करना था अश्वमानवों के ही रूप में-
हम अमृतांजल को हासिल करके ही लौटेंगे अश्वराज!
अगर पंचाश्व के इन प्रयत्नों के बाद भी अश्वराज को कुछ हो गया तो मैं भी अश्वराज के साथ अग्नि प्रवेश करूंगी।
नहीं!

आज आंधी की गति को भी पछाड़ देने की शक्ति के साथ दौड़ा जा रहा था कालाखोर-
समय के अभाव में अक्तांजन के प्रत्येक सीप को हम पांचों को अलग-अलग लेकर आना है।
इसी ज्वालामुखी के गर्भ में रखी है सुखसिप।
यहां सुर्खा के साथ मौजूद है उसे जबरन प्राप्त करने वाले की मौत भी।
सुर्खा का रक्षक खतरनाक!
पलक झपकते ही खतरनाक ने अकड़ लिया कालाखोर को-
तू जो भी है अब यहां से जीवित वापस नहीं लौटेगा।
खतरनाक ने कालाखोर को उन नुकीली चट्टानों पर उछाल दिया मगर-
उफ!

मौत को गले लगाने के लिए ही तो निकला था वह–
खतरनाक! अड़कराज की जिन्दगी बचाने के लिए सुर्खी तो मैं यहां से लेकर ही जाऊंगा। तू बेमौत मरना चाहता है...
... तो तेरी मर्जी!
खचैक
आह!
कालाखोर ने अपने मजबूत हाथों में उठा लिया खतरनाक को और–
तूने जिस सुरक्षा व्यवस्था का जाल यहां बिछाया है अब देखता हूं, कि तू खुद भी उसमें से निकल पाता है या नहीं।
नहींऽऽ
खतरनाक के लहू से सुर्ख हो उठी वह पहाड़ी।
कालाखोर ने भीतर छलांग लगा दी–
वह रहा सुर्खी तीर्थ
बाज समान झपट कर सुर्खी को मुट्ठी में दबोच लेने में एक पल भी न लगाया था कालाखोर ने
और तभी गड़गड़ाकर प्रवेश द्वार बन्द हो गया–
प्रवेश द्वार बन्द हो गया है और...

भीषण गर्मी होने लगी अन्दर और तभी एक झटके के साथ कक्ष में रखी सभी वस्तुएं खिंचने लगी उस छिद्र की ओर -
उफ! अब मैं बाहर किस प्रकार निकल पाऊंगा और यहां गर्मी प्रचण्ड रूप से बढ़ रही है।
जिस्म पर फफोले पड़ने लगे -
अगर ये जंजीर छोड़कर मैंने यहां से बाहर आने का मार्ग ढूंढने की कोशिश कि तो मैं भी उस अज्ञात खतरे की ओर खिंच जाऊंगा।
तो क्या सुर्खी को हासिल नहीं कर पाऊंगा। अश्वराज का जीवन कीमती है जिसे मुझे बचाना ही होगा।
अन्ततः यही निश्चय किया उसने -
भीषण उष्मा में भुन जाने से अच्छा होगा कि मैं खुद को उसी छिद्र में प्रवेश कर जाने दूं।
और हैरान रह गया कालाखोर -
यह क्या? मैं तो मौत के मुंह से बाहर आ गया।
वापस दौड़ पड़ा कालाखोर सुर्खी की कामयाबी के साथ -
उस छिद्र के तिलिस्म में फंसने वाले को भ्रम में डालने के लिए बनाया गया होगा ताकि छिद्र में खिंचने से बचने की कोशिश में फंसने वाला अन्दर की गर्मी में जलकर राख हो जाए।

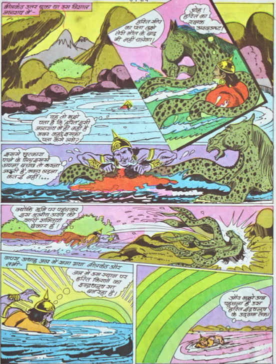
नीलकंठ उतर चुका था उस विशाल जलाशय में -
हरित-मणि का पता तुझे तेरी मौत के बाद भी नहीं चलेगा।
ओह! हरित का रक्षक अश्वअष्ट!
यह तो मुझे पता है कि 'हरित' इसी जलाशय में ही कहीं है मगर कहां-इसका पता कैसे लगे?
इससे छुटकारा पाने के लिए इससे अपना बचाव तो करना जरूरी है, मगर लड़ना कतई नहीं।...
क्योंकि भूमि पर पहुंचकर इस अलौकिक अश्व की सारी शक्तियां बेकार हैं।
वापस अथाह जल में समा गया नीलकंठ और तभी-
जल में उस स्थान पर हरित किरणों का इन्द्रधनुष सा बन रहा है।
और मुझे अब पहुंचना है उस हरित इंद्रधनुष के उद्गम तक।

शीघ्र ही आंखें चमक उठीं नीलकंठ की-
वह रहा हरित!
क्या मेरी तरह रक्त:म्बर, कालाखोर, श्रव्यशक्ति और अश्ववट भी पहुंच पाए होंगे या नहीं अपने लक्ष्यों तक।
क्योंकि इनमें से एक की भी असफलता का अर्थ अश्वराज की मौत होगा।
कई हाथ जल के तल से निकल कर नीलकंठ की ओर बढ़ने लगे-
मुझे इन हाथों की पकड़ में आने से बचना ही होगा।
उफ! जलाशय ठोस बर्फ में परिवर्तित होने लगा है।
इसी के साथ जल में भयानक उत्पात मच गया।
अगर मैं कुछ देर और यहां रहा तो बर्फ में फंसकर मारा जाऊंगा।
धंमम
आह
इस बार न जाने क्या सूझी उसे कि हरित इंद्रधनुष की तरफ उछल गया नीलकंठ-
ओह! यहां का तापमान सामान्य है यानी फिलहाल हरित किरणों में मैं सुरक्षित हूं।
और फिर-
हरित किरणों से निकलकर अब मुझे फौरन पहुंचना होगा अश्वमहल में अश्वराज के पास।
सम्राट सर्पोक ने इस तिलिस्म से बाहर आने की कोई न कोई व्यवस्था जरूर कर रखी होगी। बस यही सोचकर ही मैं हरित इंद्रधनुष में चला गया था।

श्रव्यशक्ति जिसे भविष्य के नये युग में नई आँखें हासिल हुई थीं। पहुंच चुका था उस गुफा में–
'गोरु' को प्राप्त करने के लिए मुझे चाहिए ये पंख!
इसी पल मौत की आहट सुन ली श्रव्यशक्ति ने–
!!
ओह! ये चुपचुप मुझे दबोचने को बढ़ रहा था। यही है गोरु का अत्यन्त जहरीला रक्षक अस्त्रलक्षक
हिस्स
हिस्स
जिसके शरीर के भी कुछ से छू जाने का अर्थ होता मेरे जिस्म का मोम की तरह पिघल जाना!
श्रव्यशक्ति पंख लगाकर उड़ चला–
अस्त्रलक्षक जमीन पर जहां-जहां रेंगता हुआ आ रहा था, वहां की जमीन उसके विष से काली पड़ी हुई है।
और आकाश में तैरते उस कृत्रिम बादल पर रखा है गोरु, सीप।

अश्वराज की जिन्दगी के लिए बहुत आवश्यक है गेरू।
तभी आकाश से टूटी बिजली भव्यशक्ति को राख बना देने के लिए—
ओह! बिजली कड़कने की आवाज।
कड़ड़कड़ाम
मेरी सुनने की शक्ति ने बिजली की हल्की सी कड़क के साथ ही मुझे बिजली गिरने के खतरे से सतर्क कर दिया था।
किंतु गेरू अब मेरे पास है। अश्वराज की जिन्दगी के लिए मुझे इसे किसी भी सूरत में हासिल करना ही था।
गेरू लिए अश्वमहल की ओर दौड़ पड़ा था अब भव्यशक्ति—

पातालगर्भ में मौजूद था नीलम सीप।
निकट ही एक ज्वालामुखी से बहकर आती है ये लावा नदी।
खौलते लावे की इस नदी को पार कर मैं पहुंच जाऊंगा उस गुफा में।
...इसी गुफा से होकर आता है पाताल गर्भ का रास्ता।
जहां रखा है नीलम सीप।
और तभी—
क्योंकि सम्राट अश्वलाल के अलावा यहां प्रवेश पाने वाले के लिए यह रास्ता सीधा मौत की तरफ जाता है।
ओह! अश्वकंकाल नीलम सीप का रक्षक।
और अब मैं तुझे यहां बने छिद्रों में से सीधा लावे की नदी में उछाल दूंगा!
अश्वकंकाल ने भयानक अट्टहास लगाया—
हा हा हा! नीलम सीप को हासिल करना तूने बच्चों का खेल समझ रखा था।
रक्ताम्बर के हाथ के एक ज़बरदस्त झटके से बाहर आ गिरा अश्वकंकाल—
रक्ताम्बर को नीलम सीप ले जाने से रोकना क्या तूने बच्चों का खेल समझा था अश्वकंकाल!

रक्ताम्बर ने देखी अश्व-कंकाल की भयंकर मृत्यु-
मणिविशाल ही मिट गया होगा अश्वकंकाल की अस्थियों का।
ढल्प
ढल्प
और फिर-
वाह! यही है नीलिमा सीप।
रक्ताम्बर ने देर न की थी नीलिमा को अपने अधिकार में लेने में और ऐसा होते ही-
पाताल गर्भ से बाहर ले जाने वाली सीढ़ियाँ टूट रही हैं।
पाताल गर्भ में जोरदार कम्पन्न हो रहा है। लगता है सम्पूर्ण पाताल गर्भ लावे की नदी में समा जाने वाला है।
नहीं अगर ऐसा हो गया तो मैं भी यहां फंस जाऊंगा और नीलिमा सीप अश्वराज तक नहीं पहुंच पाएगा
मुझे इसी छिद्र से ऊपर रस्सी तक...
...चट्टानों को पकड़कर जाने की कोशिश करनी होगी।

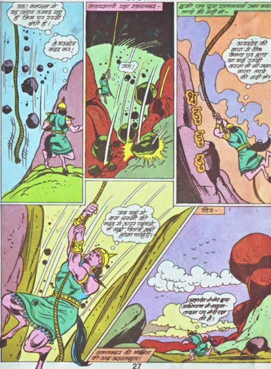
उफ! कम्पन से वह पत्थर उखड़ रहा है जिस पर रस्सी बंधी है।
हे अग्निदेव मदद कर!
भाग्यशाली रहा रक्ताम्बर -
उफ!
इसी पल पूरा पातालगर्भ समा गया लावे की नदी में -
अग्निदेव की कृपा से ठीक समय पर हाथ आ गई रस्सी वरना मैं भी समा जाता लावे की नदी में।
धड़ड़ड़
अब यहां से इस रस्सी की मदद से ऊपर पहुंचने में मुझे विलंब नहीं होना चाहिए।
रक्ताम्बर की मंजिल थी अब आसमान।
फिर -
अग्निदेव ने मेरी इस अभियान में कदम-कदम पर मेरी रक्षा की है।

सर्पकिलनगर के सर्पशिवदेव मंदिर के कपाट बन्द होते ही वहां नजर आया अश्वव्रत-
मंदिर में पूजा करते सर्पकि निवासियों की पूजा समाप्त होने की प्रतीक्षा में मेरा बहुत-सा समय व्यर्थ चला गया है।
किंतु अगर मैं इससे पूर्व श्वेत सीप को प्राप्त करने की चेष्टा करता तो बेवजह खूनखराबे व हंगामे में निर्दोष लोग मारे जाते।
लेकिन तभी जकड़ा गया वह मंदिर के रक्षक सर्प की कुण्डली में-
ओह! सर्पशिव मंदिर का रक्षक सर्प!
सर्प नहीं, अपनी मृत्यु कह।
अश्वव्रत ने अपनी मुट्ठी में दबोच ली उसकी लम्बी व लपलपाती जिव्हा-
इसकी जिव्हा पर मेरी पकड़ इसे खोखला कर देगी!
और ये तीर इसकी आंखों को बेंधने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा।
पकड़ ढीली पड़ती चली गई उसकी-

और तब–
श्वेत सीप!
क्षमा सर्पशिव देव! अश्वराज की जिंदगी के लिए मैं इसे गलत ढंग से प्राप्त कर रहा हूं।
इसी पल सरसराया वह त्रिशूल ऊपर कहीं से, मगर–
टनाक
!!
तू धन्य है सर्पशिव! आज तूने अश्वचट के नहीं अश्वराज के प्राणों की रक्षा की है।
सम्पूर्ण अश्वों की रक्षा की है।
इधर खलाम्बर, श्रव्यशक्ति, नीलकंठ और काकाखोर पहुंच चुके थे अश्वमहल में–
सूर्योदय होने में कुछ ही देर बाकी है मगर अश्वचट अभी तक श्वेत सीप लेकर नहीं लौटा।
अश्वचट!
मैं आ गया हूं भाभीश्री!

पंचाश्व ने अमृतांजन सौंप दिया राजवैद्य को तब अत्यंत गंभीर हो गए राजवैद्य-
क्या हुआ राजवैद्य! अमृतांजन से अश्वराज के विष का उपाय कीजिए।
अभी यह सम्भव नहीं है पुत्री!
अमृतांजन से विष का उपाय तभी सम्भव है जब पांच अश्व नागरिक अपने प्राणों का त्याग करें।
क्या?
तो मैं दूंगी मृत्यु कुर्बानी।
नहीं! घोड़ीलेखा, कुर्बानी मैं दूंगी।
हम..हम पांच देंगे ये कुर्बानी। हिनन!
हिन न
हिन न
नहीं! अश्वराज को तुम सब बहुत प्रिय हो। हम देंगे ये कुर्बानी।
हम... हम देंगे कुर्बानी।
और तब इधर सूर्य की सुनहरी रश्मियों ने जब अश्वलोक की धरती को छुआ-
आह!
सर्वप्रथम अश्वराज को दिखी घोड़ीलेखा-
भैया अश्वराज! तुम ठीक हो गए!

फिर कुछम-
कुछम!
अश्वराज!
और एक एक कर सभी के चेहरों पर फिसलती चली गई अश्वराज की निगाहें तब-
प... पंचरत्न कहां हैं?
अश्वराज! अश्वलोक के आकाश पर सूर्योदय से पूर्व पांच तारे आज अधिक चमक रहे थे।
हाँ अश्वराज! अमर हो चुके हैं आज पंचरत्न!
और सब कुछ जानकर ठगा सा रह गया था अश्वराज-
मेरा जीवन बचाने के लिए तुम ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। उफ! तुम महान हो खलाम्बर, तुम महान हो अश्वकट, तुम.. उफ!
अश्वराज को जिस्लता छोड़ने के लिए कुर्बान हो गए थे वे पांच।